योग प्रसंग पर उपलब्धित आलोक

(४)

''मेरे गुरुदेव ने मुझे ऐसे सहज साधन की शिक्षा दी थी जिसके द्वारा मैं मेरे आत्मीय-परिजन जो सब दूर प्रदेश में रहते है, वे सब कैसे है, यह मैं अति सहज में ही ज्ञात कर सकती थी, इस विषय में बाद में बातचीत होगी।''

–सोहं सिद्धबाबा

क्रियायोग साधन काल में प्रत्येक चक्रों पर प्राणायाम साधन करने के समय जब जप accurate (सटीक) होता है तब शब्दब्रह्म का स्पंदन प्रत्येक चक्र के केन्द्रबिन्दु (ब्रह्मबिन्दु) से उसी चक्र में सर्वत्र फैल जाता है। केन्द्रबिन्दु को ही चक्र का ब्रह्मबिन्दु कहा जाता है कारण वह ब्रह्मनाड़ी का मार्ग है। इसीलिए उसी के साथ शून्यमार्ग का सर्वत्र संयोग रहता है। शून्य शब्द हुआ ''ओम्''। शून्यमार्ग में ओंकार ध्वनि विभिन्न चक्रों में विभिन्न भाव में श्रुतिगोचर होती है। शब्द की तरंगें होती है यह जानते तो हो? इसी शब्द का शास्त्रीय नाम है ''नादब्रह्म''। नाद की चार अवस्थाएं है – परा, पश्यन्ती, मध्यमा, बैखरी। जो नाद हमसबों के अन्तर में अनुस्यूत रहता है फिर भी हम उस नाद के बारे में ज्ञात नहीं कर पाते हैं, उसका नाम है ''परा''। जब कुछ बोलने जाती हूँ, तब समझ सकती हूँ कि वही है ''पश्यन्ती''। कहने का उपक्रम ही है ''मध्यमा'' एवं दन्त ओष्ठ व तालु के स्पर्श से शब्दित जो नाद वाक्य भाषा या सुर के छंद के रूप में बाहर प्रकट हो पड़ते है उनका नाम है ''बैखरी''। बिखरती हैं, इसलिए उसका नाम है बैखरी और पश्यन्ती को प्रचलित भाषा में चिन्तन की तरंग कहा जा सकता है। बैखरी की तरह शब्द तरंग मध्यमा, पश्यन्ती और परा भी होती है। बैखरी की तरंगे सब स्थूल है और परा व पश्यन्ती क्रमशः सूक्ष्मतर है। इन परा एवं पश्यन्ती की तरंगों को जो अनुभव कर सकते है वे सब दूसरे की अन्तर की बात तुरन्त समझ सकते है। आज्ञाचक्र के साथ मूलाधार चक्र का एक अटल योग जब साधित हो जाता है अथवा मूलाधार से आज्ञा पर्यन्त प्राण-तरंग जब स्थिर रहती है तब योगी के इच्छामात्रेण ही दूरदर्शन, दूरश्रवणादि होता है। फिर, सिर्फ मूलाधार चक्रस्थित समस्त चेतना की धाराएँ उन्मुक्त होते हुए जागृत हो उठने से भी योगी को स्थूल जगत् से सम्बन्धित दूरदर्शन, दूरश्रवणादि रूप धारणा शक्ति के उन्मेष हेतु वह उसी प्रकार योगसिद्धि लाभ कर सकता है। मूलाधार चक्र की साधना को ही इस क्षेत्र में सहज पद्धति कहकर सोहं सिद्धबाबा ने व्यक्त किया है। जब कोई अपने प्रियजन के विषय में निविड़भाव में स्मरण करता है एवं अपने घटाकाश को स्थिर रखने में सक्षम हाता है तब प्रतिपक्ष भी स्मरण करे बिना रह नहीं पाता। कारण, कूटस्थ-चैतन्य हुआ universal या सर्वव्यापी मन। कूटस्थ के मध्य से एकजन दूसरे के साथ मन का संयोग कर सकता है। ऐसा जो होता है साधारण जन इससे अवगत नहीं हो पाते, परन्तु परिणाम सटीक होता है। किसी के विषय में गभीरभाव में चिन्तन करते-करते सो जाने पर भी कभी-कभी स्वप्नावस्था में vision के माध्यम से बहुत कुछ जाना जा सकता है। जिस योगी का घटाकाश स्थिर हैं, उन्हें किसी के स्मरण करने पर ही उसके विषय में घटाकाश में निमेष के मध्य ही उद्भासित हो जाता है। अन्तःस्थित इड़ा, पिंगला व सुषुम्नामार्ग में प्राणायाम के साथ गमनागमन करते-करते योगी-साधक क्रमशः इन समस्त सहज सिद्धियों का अधिकारी हो जाता हैं।

–योग व्याख्या – **श्रीश्रीमाँ सर्वाणी**